२१वीं सदी में श्रीमद्भगवत्गीता की प्रासंगिकता

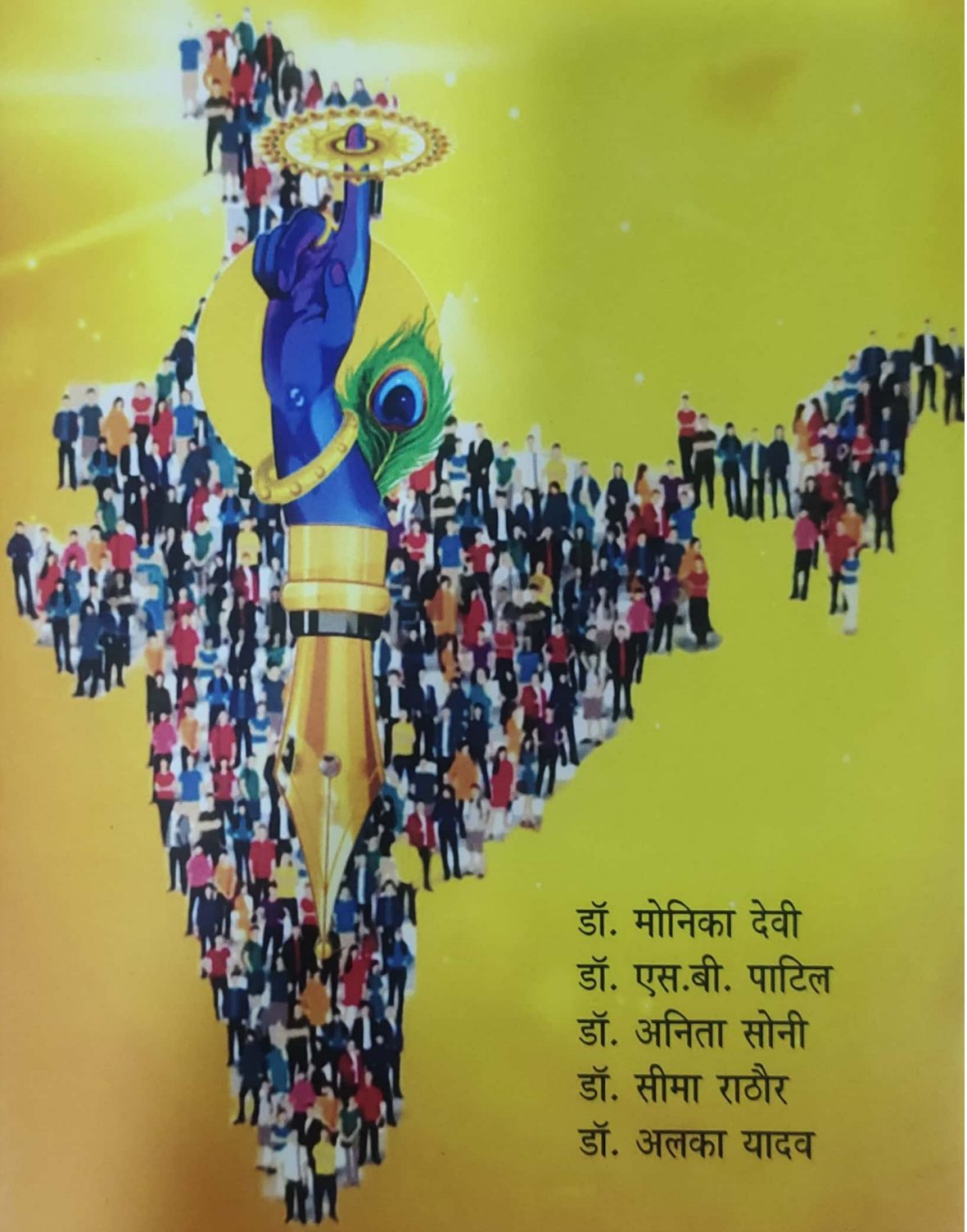

डॉ. मोनिका देवी
डॉ. एस.बी. पाटिल
डॉ. अनिता सोनी
डॉ. सीमा राठौर
डॉ. अलका यादव

CamScanner

21वीं सदी में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता

संपादक
डॉ॰ मोनिका देवी

डॉ॰ एस॰ बी॰ पाटिल
अनिता सोनी
डॉ॰सीमा राठौर
डॉ॰ अलका यादव

इंटेलेक्चुअल पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली

CamScanner

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN : 978-93-93765-08-6

(C) संपादक मंडल

मूल्य : ₹ 695/-

प्रकाशक :

इंटेलेक्चुअल पब्लिशिंग हाउस

(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

बी-336/1 , गली नं॰ 3, दूसरा पुस्ता,

सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094

मो॰ : 9868561340, 7217610640

ई-मेल : intellecturalpublishinghouse@gmail.com

वेबसाइट : www.intellecturalpublishinghouse.com

विक्रय कार्यालय :

4637/20, हरि सदन

217 द्वितीय तल, अंसारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-45647564

शब्द-संयोजन : सुविन्दर कुमार बग्गा,

पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

मुद्रक : एस. के. आफसेट, दिल्ली

21VI SADI ME SHRIMADHBHAGAWAT GEETA KI PRASANGIKATA

CamScanner

अनुक्रम

संपादकीय iii

1. वर्तमान जीवन और श्रीमद्भगवत गीता का रहस्य
- संध्या राव 9

2. विश्व की विभिन्न भाषाओं में श्रीमद्भगवत गीता का संदर्भ - डॉ.नीना शर्मा 24

3. श्रीमद्भगवत् गीता में प्रेम निरूपण का यथार्थ वर्णन
- डॉ. एस. बी. पाटिल 30

4 योगेश्वर श्रीकृष्ण और भगवद्गीता के अमृत वचन
- डॉ. अलका यादव, 35

5. वर्तमान में गीता की उपादेयता
-प्रो. वेद प्रकाश मिश्र 38

6 श्रीमद्भगवत की वर्तमान में प्रासंगिकता
- डॉ. गणपत राठोड, 43

7 वर्तमान में श्रीमद्भगवतगीता की उपयोगिता
- प्रो. महेंद्र वासवे 49

8. श्रीमद्भगवद्गीता में शैक्षिक मूल्य : समुन्नत भविष्य की आधारशिला -डॉ. आशुतोष पारीक 52

9. भगवत गीता में वर्णित सर्वांगीण शिक्षा पद्धति
-डॉ. एण्टनी ऑलिवर 62

10 आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भगवतगीता की प्रासंगिकता
- डॉ. स्नेहलता शर्मा 68

CamScanner

श्रीमद्भगवत् गीता में प्रेम निरूपण का यथार्थ वर्णन

डॉ. एस. बी. पाटिल

गीता विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो मानव को जीने का ढंग सिखाता है। गीता की दिव्यता आस्था की स्वतंत्रता है। गीता जीवन में प्रेम का पाठ पढ़ाती है। प्रेम में शान्ति निहित होती है। यह बात महामंडलेश्वर गीती मनीषी स्वामी ज्ञानचंद महाराज ने कही है। उन्होंने कहा कि प्रेम ही जीवन का आधार है जिस के जीवन में प्रेम है, उसके जीवन में शांति है, प्रेम में ही शांति निहित है, प्रेम है तो थोड़े में ही संतुष्टि है। दुर्योधन के जीवन में प्रेम नहीं था इसलिए दुर्योधन ने गोविंद के मांगने की बजाए सेना व शस्त्र मांगे। उसके मन में अहंकार, ईर्ष्या व द्वेष पूरी तरह घर कर गया। जिसके जीवन में ऐसी वृत्तियाँ आ जाती है उसका पतन निश्चित होता है क्योंकि यह वृत्तियाँ निश्चित होता है, क्योंकि यह वृत्तियाँ दीमक की तरह इंसान को अंदर से खोखला कर देता है।

उन्होंने कहा कि गीता में जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। पहली चेतना अर्थात् आत्मा, दूसरी बुद्धि जो निर्णय लेती है या निर्णय करती है, तीसरा मन जो विचार करता है तथा चौथा बाहरी ढाँचा जिसे हम शरीर कहते हैं। इन चारों से जीवन पूरा होता है। इंद्रियों से परे बुद्धि, बुद्धि से परे मन और मन से श्रेष्ठ चेतना अर्थात् आत्मा है। बिना आत्मा के कोई कर्म नहीं हो सकता। उन्होंने कहा है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो चरित्र का निर्माण करें, बुद्धि का विकास करें, मनोबल बढ़ाए, जब

CamScanner

ऐसी शिक्षा जीवन में होगी तो अच्चे संस्कारवान बनेंगे।

श्रीमद्भगवत गीता का प्रारंभ और पर्यवसान भगवान की शरणागति में है। यही गीता का प्रेम तत्त्व है। गीता की भगवत.... गति का ही नाम 'प्रेम' है। प्रेममय भगवान अपने प्रियतम सखा अर्जुन को प्रेम के वश होकर वह मार्ग बतलाते है, जिसमें इसके लिए एक प्रेम के सिवा और कुछ करना बाकी रह ही नहीं जाता। श्रीमद्भगवतगीता में प्रेम का विषय है। परंतु विचार कर देखने पर मालूम होता है कि 'प्रेम' शब्द ही बाहरी पोशाक न रहने पर भी गीता के अंदर प्रेम ओत-प्रोत है। गीता भागवत-प्रेम रस का .... समुद्र है।

वास्तव में प्रेम मनुष्य के हृदय को ही मिलता है यह बाहरी वस्तु नहीं है। हृदय से ही किया जाता है जो बाहर से किया जाता है वह तो प्रेम का बाहरी ढाँचा होता है। हनुमान जी ने श्रीराम जी का संदेश माता सीता को इस प्रकार सुनाते हैं -

तत्त्व प्रेम कर सम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मेरा।
सो मनु सदा रहत तेहि पाही। जानु सीति रमु एजनेहि माही।।

गोपिकाओं की प्रेमोपासना

गोपी-प्रेम का तत्त्व वही प्रेमी भक्त कुछ जान सकता है जिसे भगवान कि हालादेवी शक्ति राधिका जी और आनन्द तथा प्रेम के द्विव्य समुद्र भगवान श्रीकृष्ण की कृपापूर्वक जना दें। जानने वाले भी उसे कह या लिख नहीं सकता। क्योंकि 'गोपी प्रेम' का प्रकाश करने वाली भगवान की वृंदावन लीला सर्वथा अनिवर्चनीय है। वह कल्पनातीत, अलौकिक और अप्राकृत है।

समस्त ब्रजवासी भगवान के मायायुक्त परिकर है और भगवान की निज आनन्द शक्ति योग्य माया श्री राधिका जी की अध्यक्षता में भगवान श्रीकृष्ण की मधुर लीला के योग देने के लिए ब्रज में प्रकट हुए है। ब्रज में प्रकट इन महात्माओं की चरण रज की चाह हुए सृष्टि कर्ता ब्रह्माजी स्वयं कहते हैं -

तदस्तु में नाथ स भूरिभागो
भवेऽत्र बान्यत्र तु वा तिरक्षाम।

पेनाहमेकोडारी भवज्जनानां
भूत्वा निषेवे तन पादपल्लवम्।।
अहो भाग्यमतो भाग्यं नन्दगोप ब्रजौकसाम्।
यन्मित्र परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम्।।
तद्भूरिभाग्यमिह जन्म किमप्यख्यां।
यद् गोकुलेऽपि कतमाङ्घ्रिजोऽभिषेकम्।
यजजीवितं तु निखिलं भगवान्मुकुंद
सत्त्वद्यापि यत्पदरज श्रुतिमृग्यमेव।।[1]

"हे प्रभो! मुझे ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो कि मैं इस जन्म में अथवा किसी तिर्यक-योनि में ही जन्म लेकर आपके दासों में से एक होऊँ, जिससे आपके चरण कमलों की सेवा कर सकूँ। अहो! नन्दादि ब्रजवासी धन्य है। इनके धन्य भाग्य हैं, जिनके सुहृदय परमानन्द रूप सनातन पूर्ण ब्रह्म स्वयं आप हैं। इस धरातल पर ब्रज में और उसमें श्री गोकुल में किसी कीड़े-मकोड़े की योनि पाना ही परम सौभाग्य है जिससे कभी किसी ब्रजवासी की चरण रज से मस्तक को अभिषिक्त होने का सौभाग्य मिले।"[2]

गोपी प्रेम में राग का अभाव नहीं है। परंतु वह राग सब जगह से सिमट कर, भुक्ति और मुक्ति के दुर्गम प्रलोभन-पर्वतों को लांघकर केवल श्रीकृष्ण में अर्पण हो गया है। गोपियों के मन-प्राण सब कुछ श्रीकृष्ण के हैं। इह लोक और परलोक में गोपियाँ श्रीकृष्ण के सिवा अन्य किसी को भी नहीं जानती। उनका जीवन श्रीकृष्ण सुख के लिए है, उनका जागना-सोना, खाना-पीना, चलना-फिरना, शृंगार-सज्जा करना, कबरी बांधना, गीत गाना और बातचीत करना, सब श्रीकृष्ण को सुख पहुँचाने के लिए है। श्रीकृष्ण को सुखी देखकर ही संपूर्ण कामनाओं से सर्वथा शून्य उन गोपियों को अपार सुख होता है। भगवान ने स्वयं कहा है -

'निजांगमपि या गोप्यो यमेति समु.....।
तात्यः परं न में पार्थ निगूढ़ प्रेम भाजनम्।।

हे अर्जुन! गोपियाँ अपने शरीर की रक्षा मेरी सेवा के लिए ही करती है। गोपियों को छोड़कर मेरा निगूढ़ प्रेम-पात्र और कोई नहीं है। यथार्थ प्रेम में ही काम का नाश हो जाता है। यद्यपि प्रेमी अपने प्रेमास्पद को सुख

पहुँचाने की इच्छा को कामना ही मानता है और समस्त इन्द्रियां मन एवं बुद्धि एकमात्र प्रेम सुखी होने से उसे कामना ही करते है। परंतु वह शुद्ध प्रेम यथार्थ से काम नहीं है।

गोपियों ने श्रीकृष्ण को अपना सब कुछ माना उनके लिए शुद्ध अनुराग करना ही पवित्र गोपी भाव है। इस गोपी भाव में मधुर रस की प्रधानता है। पाँच रस है - शांत, वास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य। लौकिक और ईश्वरीय दिव्य भेद में ये पांचां रस दो प्रकार के है अर्थात् लौकिक प्रेम में भी उपुर्यक्त पाँच प्रकार का है।

प्रियतम का निरंतर चिंतन उससे मिलने की अतृप्त उत्कण्ठा और प्रियतम में दोष दृष्टि का सर्वथा अभाव। स्वकीया में सदा एक ही घर में एक साथ निवास होने के कारण ये तीनों कहीं नहीं होती। गोपियाँ भगवान को नित्य देखती थी परंतु परकीया भाव की प्रधानता से क्षण भर का वियोग भी उनके लिए असह्य हो जाता था, आँखों पर चलक बनाने के लिए वे विधाता को कोसती थी, क्योंकि पलकें न होती तो आँखें सदा खुली ही रहती।

गोपियाँ कहती है -

अटती यद्भवाह्निन काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद दृशाम्।।[3]

जब आप दिन के समय वन में विचरते हैं तब आपको न देख सकने के कारण हमारे लिए एक-एक पल युग के समान बीतता है। फिर संध्या के समय, जब वन से लौटते सम हम घुँघरानी अलकावलियों से युक्त आपके श्रीमुख को देखती है। तब हमें आँखों में पलक बनाने वाले ब्रह्मा मूर्ख प्रतीत होने लगते है अर्थात् एक पल भी आपको देखे बिना हमें कल नहीं पड़ती।

भगवान का साक्षात् रूप प्रेम ही ह जिसे विशुद्ध सच्चे प्रेम की प्राप्ति हो गयी उसे भगवान मिल गये -यह मानना चाहिए प्रेम न हो तो रुख-सूखे भगवान भाव जगत् की वस्तु रहे ही नहीं। वास्तव में प्रभु रस रूप है। श्रुतियों में भी परम पुरुष की रस रूपता का वर्णन मिलता है -"रसौ वै सः।"[4]

प्रेम का निजी रूप रस स्वरूप परमात्मा ही है इसलिए जैसे परमात्मा सर्वव्यापक है वैसे ही प्रेम तत्त्व (आनंद रस) भी सर्वत्र व्याप्त है। हर एक जंतु में तथा हर एक परमाणु में आनंद अथवा रस स्वरूप प्रेम की व्याप्ति है। संसार में बिना प्रेम या आनंद रस के एक-दूसरे से मिलना नहीं हो सकता। स्त्री, पुरुष, पुत्र, मित्र, पिता, भ्राता, पुत्रवधु तथा पशु-पक्षी आदि से भी प्रीति या स्नेह इस प्रेम रस की व्याप्ति के कारण ही है।

कहते है कि गुड़ के संबंध से नीरस वेसन में मिठास आ जाती है। इसी प्रकार 'स्व' के संबंध से अर्थात् अपनेपन के संबंध में संसार वस्तुओं में भी प्रीति होती है। संसार की जिस वस्तु में जितना अपनापन होगा, वह वस्तु उतनी ही प्यारी लगेगी।

प्रेम में राग होना स्वाभाविक है। प्रेम दीवानी मीराबाई के ..... में उनकी प्रेम विह्लता का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है :-

हे री मैं तो दरद दिवाणी मेगे दरद न जापै कोय।
घायल की गति घायल जानै जो कोइ घायल होय।
जौहरि की गति जौहरी जाणै की जिन जैहर होय।।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस विध होय।
गगन मँडलकर सेज पियाकी किस विध मिलणा होय।
दरद की मारी बन-बन डोलूँ बैद मिल्या नहि कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जद बैठ साँवलिया होय।।

वस्तुतः मिलन और वियोग प्रेम के दो समान स्तर है। इन दोनों में ही प्रेमीजनों की अनुभूति में समान रति है। आनंदस्वरूप भगवान में जो राग होता है, वह भगवान से मिलने की इच्छा उत्पन्न करता है और उनका वियोग अत्यंत दुःखदायी होता है। परंतु भगवान के लिए होने वाली व्याकुलता अत्यंत दुखदायनी होने पर भी परम सुख स्वरूपा होती है। गीता में प्रेम का जो सार है वही परमात्मा का आधार है। जीवन प्रेम से तभी भग रहेगा जब मनुष्य के मन में दूसरे के प्रति भी प्रेम उत्पन्न हो। यही मानवता है। यही गीता सार है। जीवन का आधार है।

CamScanner

डॉ. सीमा राठौर

एम. ए., पीएच.डी.

विषय क्षेत्र : तुलनात्मक साहित्य, मिडिया लेखन और नाटक

शैक्षणिक अनुभव : 20 वर्ष

पुस्तक प्रकाशित : 03

शोधपत्र : 30

अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी : 62

अतिथि व्याख्यान : 30

ओरीएन्टेशन कोर्स : 01

रिफेशर कोर्स : 04

पीएच.डी. उपाधिधारक छात्र : 04

एम. फिल्. उपाधिधारक छात्र : 11

विशेष अभिरूचि : रचनात्मक लेखन, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं रंगमंच

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर, गुजरात-388120

चलभाषा : 9824716158

डॉ. एस. बी. पाटिल

शिक्षा : एम.ए, एम.फिल्,

पी-एच डी,

शोध पत्र : राष्ट्रीय शोध पत्र-15

प्रकाशित शोध पत्र-13

सेमिनार

सेमिनार/कार्यशाला 119

अन्य अनुभव

अनुभव कॉलेज-29

Nss कार्यकर्म 8 साल

Vice प्रिंसिपल जून 2013-2020

प्राचार्य 2020 से अब तक

CamScanner